जंगनामा काव्य परंपरा

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
लखनऊ से हिंदी साहित्य विषय में
पीएच०डी० की उपाधि
हेतु प्रस्तुत

शोध-सारांशिका

शोधार्थी
शची त्रिपाठी
नामांकन संख्या: 1689/20

शोध निर्देशक
प्रो० सर्वेश सिंह
हिंदी विभाग

हिन्दी विभाग
भाषा एवं साहित्य विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय) (NAAC : A++ ACCREDITATION)
विद्या विहार, रायबरेली रोड,
लखनऊ-226025 (उ०प्र०), भारत

2024

शोध-सारांशिका

'जंग' शब्द हिंदी भाषा के युद्ध शब्द का समानार्थी है। युद्ध और मनुष्य का संबंध अत्यंत प्राचीन है। मानव और मानव-सभ्यता के आदिम चरण में जब न तो सभ्यता और संस्कृति का पूर्ण निर्माण और विकास हुआ था और न ही मनुष्य की बुद्धि और कौशल किसी विशिष्ट संदर्भ हेतु दीक्षित हुये थे, तब से युद्ध किसी न किसी रूप, कारण और हेतु के साथ मनुष्य से सम्बद्ध होकर मनुष्य को प्रत्यक्ष-परोक्ष प्रभावित और संस्कारित करता रहा हैं। ध्यातव्य है, युद्ध अथवा संघर्ष के प्राथमिक चिन्ह मनुष्येत्तर प्रकृति और प्राकृतिक शक्तियों के सन्दर्भ में प्राप्त होते हैं। कहना न होगा, प्रकृति स्वयं अपने अस्तित्व हेतु आंतरिक और बाह्य रूप में व्यतिरेकी शक्तियों के साथ विशिष्ट संघर्ष के विधान द्वारा ही विकसित और संचालित होती रही है। भारतीय मनीषा सृष्टि के प्रारम्भिक चरण से ही उपर्युक्त संघर्ष अथवा युद्ध की साक्षी रही है। इसको, अंधकार को अपने तेजपुंज से विदीर्ण करते प्रकाश तथा प्रकाश के अंत अथवा अभाव में अपने अस्तित्व का अनुसन्धान करते अंधकार के मध्य भी एक प्राकृतिक और नैसर्गिक युद्ध दिखाई देता है। सृष्टि-संचालन के क्रम में, दिन और रात की परिघटना प्रकाश और अंधकार के इसी संघर्ष अथवा युद्ध का महत्तम प्रमाण है। यह विशिष्ट आवरण में बन्द पुष्प-कली के विकास-क्रम में, कली के चिटकने तथा बाहरी खोल को नष्ट करके प्रसरित और विकसित होकर पुष्प बनने की प्रक्रिया में भी एक विशिष्ट और आवश्यक संघर्ष अथवा युद्ध देखता है। समानांतर, बादलों को चीरते हुए अपने तेज से सृष्टि को विकसित और आह्लादित करते सूर्य तथा अपने प्रसार और प्रभाव की स्वाभाविक आकांक्षा में सूर्य को ढँककर उसके प्रकाश और प्रभाव को मन्द करते बादलों के गुम्फ के मध्य भी भारतीय मनीषा को एक विशिष्ट युद्ध अथवा संघर्ष प्राप्त होता है। अपने दुर्गम और कठोर प्रकृति द्वारा नदियों के मार्ग को अवरुद्ध करते बड़े-बड़े शिलाओं तथा उन शिलाखंडों को अपनी धारा के प्रबल आवेग से निरंतर भग्न करते हुए नदी द्वारा अपने प्रवाह-मार्ग के निर्माण में भी भारतीय मनीषा को संघर्ष की विशेष चेतना दिखाई देती है। जल-समूह को अपने कन्धों पर लादे, अपने अस्तित्व के लिए हवाओं के

साथ संघर्षरत बादलों की प्रकृति में भी यह एक विशिष्ट संघर्ष अथवा युद्ध के चिन्ह देखता है। पेड़ों पर फलों के लगने, डाली से टूटकर उनके गिरने और बीज रूप में धरती से मिलकर पुनः पौधे और पेड़ के रूप में उगने और विकसित होने के विशिष्ट चक्रीय क्रम को भी भारतीय चिंतन-दृष्टि प्रकृति और प्राकृतिक शक्तियों के मध्य के विशिष्ट द्वंद्व, संघर्ष अथवा युद्ध के रूप में ही देखती है। कहना न होगा, मनुष्य को सम्भवतः युद्ध के संदर्भ में प्राथमिक प्रेरणा प्रकृति के उपर्युक्त संघर्ष, द्वंद्व अथवा युद्ध से ही प्राप्त हुई होगी। प्राकृतिक शक्तियों के मध्य घटित पारस्परिक द्वन्द्व अथवा संघर्ष की इसी क्रिया-प्रक्रिया ने निःसंदेह मानव के मस्तिष्क में संघर्ष अथवा युद्ध के बीज प्रथमता बोये होंगे। समानान्तर, इसी संघर्ष से प्राप्त वैचारिक प्रबोध ने ही मनुष्य में प्रतिकूल परिस्थितियों के विरुद्ध संघर्ष और जिजीविषा को जन्म दिया होगा।

ध्यातव्य है, मनुष्य की विचार, बुद्धि और मस्तिष्क में प्रथमतः संघर्ष द्वंद्व अथवा युद्ध के उपर्युक्त भाव पूर्णतः अहिंसक वृत्ति के रूप में जन्मे होंगे किंतु कालांतर में शनैः शनैः मनुष्य में बुद्धि और हिंसक वृत्ति के विकास के सापेक्ष युद्ध का स्वरूप भी हिंसक होता गया होगा। जंगनामा-काव्य मनुष्य के अंतर के उपर्युक्त युद्ध और हिंसा-भाव के मूर्तीकरण के विशिष्ट उपक्रमों के आख्यान का ही नाम है। सभ्यता और संस्कृति के आदिम चरण में सांकेतिक मौखिक संवाद की प्रधानता और लिपि विकास के अभाव के कारण मानव-सभ्यता के समानांतर उद्भूत और विकसित युद्ध अथवा हिंसावृति आदि के संबंध में कोई विशेष लिखित सामग्री प्राप्त न होकर जननश्रुति और किवंदतियों के रूप में युद्ध, युद्ध-परंपरा और युद्ध विषयक आख्यान प्राप्त होते हैं। कालांतर में, लिपि-विकास के सापेक्ष जंगनामा अर्थात युद्ध विषयक आलेखों की प्राप्ति सद्यः गोचर होती है तथापि मानव बुद्धि के कलात्मक विकास के उपरांत ही काव्य के रूप में वीर-काव्य, युद्ध-काव्य अथवा जंगनामा काव्य-परंपरा के उद्भव और क्रमिक विकास के प्रमाण प्राप्त होते हैं।

साहित्य के सन्दर्भ में, युद्धाख्यान परम्परा के प्राथमिक सूत्र ऋग्वेद के अंतर्गत दशराज्ञ युद्ध विषयक आख्यान के अंतर्गत प्राप्त होता है। ध्यातव्य है, ऋग्वेद को अपौरुषेय कहा गया है, अतः ऋग्वेद में प्राप्य युद्ध विषयक आख्यान की ऐतिहासिकता अप्रमाणिक और मिथकीय है तथापि युद्ध

विषयक आदि-आख्यानक होने के कारण इसका पृथक वैशिष्ट्य और महत्व स्वयंसिद्ध है। साहित्य के अंतर्गत युद्ध आख्यानकों की परंपरा में, युद्ध विषयक आख्यान के प्रथम पुष्ट-प्रमाण बाल्मीकि कृत 'रामायण' महाकाव्य के अंतर्गत प्राप्त होता है किन्तु बाल्मीकि कृत 'रामायण' महाकाव्य के अंतर्गत भी युद्ध-विषयक आख्यान मात्रात्मक रूप में अत्यल्प ही है। तदनंतर, संस्कृत-साहित्य में 'महाभारत' महाकाव्य के अंतर्गत युद्ध-विषयक आख्यान मात्रात्मक रूप में अपेक्षाकृत अधिक प्राप्त होते हैं तथा महाकाव्य की विषयवस्तु अथवा मूल-भावना युद्ध से पूर्णतः सम्बद्ध भी है तथापि उपर्युक्त युद्ध-विषयक आख्यान महाकाव्य के अंतिम सर्ग के अंतर्गत ही प्राप्त होता है। महाकाव्य का शेष कथानक-विन्यास युद्ध की भूमिका निर्मित करने वाले तत्त्वों, तथ्यों, घटनावालियों और प्रसंगों आदि से संबन्धित है। समानान्तर, साहित्य के अंतर्गत युद्ध विषयक आख्यानकों की परंपरा में महाकाव्य रामायण और महाभारत के परवर्ती अन्य संस्कृत-काव्यों में भी प्रसंगवश कथांश के रूप में युद्ध-विषयक आख्यानकों की प्राप्ति स्वयंसिद्ध है।

कालांतर में, भाषा और साहित्य के विकास-क्रम में संस्कृत, पालि, प्राकृत और अपभ्रंश से होते हुए हिन्दी साहित्य के अंतर्गत युद्ध-विषयक आख्यानकों की परम्परा आदिकालीन वीर-काव्य परंपरा के रूप में प्रथमतः आविर्भूत होती है। युद्ध-विषयक आख्यानकों की प्रचुर गुणात्मक और मात्रात्मक उपस्थित के कारण ही आदिकालीन हिन्दी साहित्य के अंतर्गत युद्ध अथवा वीर-काव्य परंपरा के नियोजित उद्भव और विकास के प्रमाण भी प्राप्त होते हैं। ध्यातव्य है, आदिकालीन युद्ध अथवा वीर-काव्य परंपरा के अंतर्गत यद्यपि 'परमाल रासो' जैसे काव्यों के अंतर्गत वीर-कर्म अथवा युद्ध विषयक अख्यानकों के प्रचुर और पुष्ट प्रतिमान प्राप्त होते हैं तथापि ऐतिहासिकता और कथावस्तु के मिश्रित स्वरूप के आधार पर आदिकालीन युद्ध अथवा वीर-काव्य परंपरा स्वयं को कदाचित विशुद्ध युद्ध काव्य-परम्परा अथवा जंगनामा काव्य-परम्परा के रूप में स्थापित करने में अक्षम रही। आदिकालीन युद्ध अथवा वीर-काव्य परंपरा के अंतर्गत कथावस्तु और कथा-विन्यास के क्रम में युद्ध और वीर-कर्म विषयक आख्यान अत्यंत महत्वपूर्ण और केन्द्रीय भूमिका में हैं तथापि युद्ध के अतिरिक्त अन्य प्रासंगिक अख्यानकों का भी समानान्तर विकास सद्यः गोचर है।

हिन्दी साहित्य के अंतर्गत युद्ध अथवा वीर काव्य की उपर्युक्त परंपरा आदिकालीन और भक्तिकालीन वीर-काव्य परंपरा के रूप में विकसित होती हुई मध्यकाल विशेषतया रीतिकाल के अंतर्गत जंगनामा काव्य-परंपरा अर्थात विशद्ध युद्ध-काव्य परम्परा के रूप में स्वयं को स्थापित करती है। कहना न होगा, मध्यकाल विशेषतया रीतिकाल के अंतर्गत प्राप्य उपर्युक्त काव्य-परंपरा के ग्रन्थों की विषयवस्तु का आदि, मध्य और अन्त युद्ध अथवा युद्ध विषयक अन्यानेक प्रसंगों को ही मूल प्रतिपाद्य के रूप में ग्रहण करता है।

ध्यातव्य है, रीतिकालीन जंगनामा काव्य-परंपरा यद्यपि आदिकालीन और मध्यकालीन वीर-काव्य परंपरा का ही विकसित रूप है तथापि रीतिकालीन जंगनामा-काव्य, आदिकालीन और भक्तिकालीन वीर-काव्य अथवा युद्ध-काव्य से कथावस्तु, कथानक, कथा-कथन अर्थात कथानक प्रस्तुतीकरण, चरित्र-विन्यास और भाषिक सृष्टि के संदर्भ में विशिष्ट और पृथक है। कहना न होगा कि, रीतिकालीन जंगनामा काव्य-परंपरा, आदिकालीन और भक्तिकालीन वीर-काव्य अथवा युद्ध-काव्य परंपरा से भावात्मकता और कलात्मक दोनों दृष्टि से विशिष्ट सीमा के भीतर भिन्न और विशिष्ट स्वरूप ग्रहण करती है। ध्यातव्य है, आदिकालीन और भक्तिकालीन वीर-काव्य अथवा युद्ध-काव्य परंपरा के अंतर्गत युद्ध और उससे संबंधित आख्यानकों के प्रस्तुतीकरण के क्रम में जहाँ एक ओर वीरकर्म अथवा युद्ध का विशद विवेचन और वर्णन किया गया है तो वही समानांतर युद्ध के नायकों, तत्कालीन सांस्कृतिक-परिस्थिति, सामाजिक-संरचना आदि सन्दर्भों का भी सूक्ष्म और युद्धपरक आख्यान भी प्राप्त होता है। वीर-काव्य परंपरा के अंतर्गत वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक प्रत्येक आयामों के सन्दर्भ में युद्ध के प्रेरक तत्वों, तथ्यों और कारणों को देखा जा सकता है। उपर्युक्त समस्त कारण युद्ध की पृष्ठभूमि के निर्माण, युद्ध को प्रेरित, घोषित और विकसित करने का महत्वपूर्ण उपक्रम प्रदान करते हैं। अधिकांश आदिकालीन वीर-काव्यों के अंतर्गत नारी अर्थात प्रेमिका अथवा पत्नी युद्धों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण रही है किंतु रीतिकालीन जंगनामा काव्य-परंपरा नारी विषयक उपर्युक्त आग्रह से स्वयं को पूर्णतः मुक्त रखती है। कंचन-कामिनी रीतिकालीन जंगनामा-काव्य परंपरा के अंतर्गत न तो जंग के सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण के

रूप में उभरकर सामने आये हैं न ही विषयवस्तु के अंतर्गत इन्हें केंद्रीय स्थान प्रदान किया गया है अपितु मातृभूमि के प्रति प्रेम, स्वाभिमान, सम्मान, सुरक्षा, त्याग, आत्मगौरव का भाव तथा राज्य और प्रजा के हित की सुरक्षा और विस्तार की महत्वाकांक्षा जंगनामा-काव्य परंपरा के अंतर्गत युद्ध और संघर्ष के कारण के रूप में उपस्थित होती है। कहना न होगा, जंगनामा काव्य-परंपरा, आदिकालीन और भक्तिकालीन वीर-काव्य परंपरा से कदाचित इस अर्थ में विशिष्ट और पृथक है कि आदिकालीन और भक्तिकालीन वीर-काव्य परंपरा के अंतर्गत प्राप्त श्रृंगारिक आभास अर्थात श्रृंगार पक्ष को रीतिकालीन जंगनामा काव्य-परंपरा स्वयं से पृथक रखती है तथा विशुद्ध युद्ध-काव्य के रूप विकसित और विस्तृत होती हुई युद्ध और युद्ध विषयक आचार-विचार और व्यवहार को कथावस्तु के अंतर्गत मूल प्रतिपाद्य के रूप में ग्रहण करती है।

जंगनामा काव्य, विशुद्ध युद्ध काव्य हैं। इनमें वर्णित युद्ध आख्यानक प्रसंगवश समाहित नही है अपितु सोद्देश्य वर्णित और कथानक का मूल केंद्र है। नायक की वंशावली का वर्णन, उनका चरित-गान, दानशीलता, स्वाभिमान रक्षा, धर्म-शीलता, धर्मरक्षा, वंश-कुल मर्यादा की रक्षा, युद्ध कुशलता, सहयोगियो की कीर्ति-वीरता का वर्णन, विभिन्न यौद्धिक अस्त्रों-शस्त्रों और युद्ध सहयोगी पशुओं का वर्णन, व्यूह-रचना कौशल का वर्णन, भयानक युद्ध अथवा संघर्ष का वीभत्स और सूक्ष्म वर्णन ही जंगनामा काव्य और काव्यकारों का प्रमुख ध्येय रहा है। अधिकांश जंगनामा-काव्य में इस उद्देश्य की प्राप्ति के क्रम में रचनाकारों के माध्यम से घटित सायाश प्रयत्नों ने कथानक को अव्यवस्थित और दुरुह तक बना दिया है तथापि युद्ध वर्णन ही उपर्युक्त काव्य-परंपरा का महत्वपूर्ण उद्देश्य, प्रतिपाद्य और प्रदेय है। समानान्तर, अन्य काव्य रूप यथा- बेलि काव्य, बात काव्य, रासो काव्य, पौराणिक-काव्य, भक्ति-काव्य, नीति-काव्य, श्रृंगार-काव्य आदि वैयक्तिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के विविध आयाम, भाव और विषय को अपनी कथावस्तु के अन्तर्गत समाहित करते है। उपर्युक्त समस्त काव्य रूपों के संदर्भ में, काव्य की विषयवस्तु के भाव पक्ष और कला पक्ष का विशिष्ट वैविध्य और वैशिष्ट्य स्वयंसिद्ध है। 'बेलि काव्य' जहाँ एक ओर प्रशस्ति काव्य है तो वहीं 'बात काव्य' राजस्थानी वातावरण, धर्म, विवाह व वीरता की कथाओं का आख्यानक है।

इसी क्रम में, रासो काव्य भी राजस्थानी पृष्ठभूमि पर आधारित चरित काव्य अथवा वीर-काव्य है। समानान्तर, पौराणिक काव्य और भक्ति काव्य की विषयवस्तु के अंतर्गत ईश्वर और ईश्वर विषयक अनन्य रति अर्थात प्रेम, भक्ति और समर्पण का उदात्त भाव विद्यमान है तो वहीं नीति काव्य की विषयवस्तु वैयक्तिक, सामाजिक आचार, विचार और व्यवहार का मानक, नैतिक और व्यवहारिक प्रतिमान से संबन्धित है। समानान्तर, श्रृंगार-काव्य अपनी विशिष्ट विषयवस्तु के अंतर्गत लौकिक प्रेम और शृंगार को कथ्य के रूप में प्रस्तुत करता है। अतः साहित्य की विशिष्ट विधा के रूप में काव्य के विविध रूपों के संक्षिप्त तुलनात्मक परिचय के क्रम में, यह स्पष्ट है कि वीर-भाव, भक्ति, नीति और प्रेम के विशिष्ट आख्यानक के रूप में उपर्युक्त समस्त काव्य रूपों में निःसन्देह विषयवस्तु के अंश और उपांग रूप में युद्ध की घटना और युद्ध से संबन्धित आचार, विचार, व्यवहार और वीर रस की निष्पत्ति भी प्राप्ति होती है तथापि उपर्युक्त समस्त काव्य-रूप अथवा काव्य-परंपरा काव्य के स्वरूप, लक्षण, कारण और परिणाम के संदर्भ में जंगनामा-काव्य और काव्य-परंपरा से सर्वथा विरत है।

ध्यातव्य है, जंगनामा काव्य-परंपरा इतिहास सम्मत और इतिहास आद्धृत काव्य-परंपरा है। जंगनामा काव्य-परंपरा की उत्पत्ति, जंगनामा काव्य की विकास-परंपरा तथा जंगनामा काव्य-परंपरा के महत्वपूर्ण काव्य-ग्रन्थों की कथावस्तु के अंतर्गत इतिहास और ऐतिहासिकता के महत्वपूर्ण साक्ष्य, सूत्र और प्रमाण प्राप्त होते हैं। ऐतिहासिक पुष्टि और साहित्यिक प्रमाणों के आधार पर तथ्य स्वयंसिद्ध है कि जंगनामा काव्य-परंपरा के प्रारंभिक सूत्र युद्धाख्यान और कथावस्तु के उपांग के रूप में जहाँ वैदिक साहित्य से प्राप्त होते हैं तो वहीं उपर्युक्त युद्धख्यान-परंपरा लौकिक संस्कृत तथा लौकिक संस्कृत के परवर्ती रूपों पालि, प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य से होते हुए हिन्दी साहित्येतिहास के अंतर्गत आदिकालीन वीरगाथा-काव्य के रूप में प्रस्फुटित होती है। समानान्तर, मध्यकाल विशेषतः रीतिकाल के अंतर्गत प्रथमतः विशुद्ध काव्य के रूप में, जंगनामा काव्य-परंपरा का उद्भव-विकास गोचर और प्रमाणित होता है। कहना न होगा, काव्य-परंपरा के रूप में जहाँ एक ओर जंगनामा काव्य-परम्परा के उद्भव-विकास की ऐतिहासिकता पूर्णपुष्ट है तो वहीं दूसरी ओर

हिन्दी साहित्य की विशिष्ट काव्य-परम्परा के रूप में जंगनामा काव्य की विकास-परंपरा स्वयंसिद्ध है। समानान्तर, जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत प्राप्य महत्वपूर्ण जंगनामा-ग्रन्थों की विषयवस्तु और कथावस्तु के अंतर्गत वर्णित घटनाओं के संदर्भ में इतिहास और ऐतिहासिक तथ्यों और तत्वों का अनुसंधान भी जंगनामा काव्य-परंपरा की ऐतिहासिकता की पुष्टि के क्रम में अत्यंत महत्वपूर्ण तथ्य और तत्त्व है। जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत प्राप्य महत्वपूर्ण जंगनामा-ग्रन्थों की विषयवस्तु, कथानक-सृष्टि, चरित्र-सृष्टि, युद्ध, युद्ध-काल, युद्ध के कारण, युद्ध के परिणाम, युद्ध में आक्रांता, युद्ध संबंधी विशिष्ट घटनाओं और विविध कार्य-व्यापार तथा जंगनामा के नायकों-प्रतिनायकों की चरित्र-सृष्टि और चरित्र-विन्यास के संदर्भ में भी विशिष्ट ऐतिहासिकता और प्रामाणिकता की पुष्टि होती है। कहना न होगा, जंगनामा काव्य ग्रन्थों के अंतर्गत उपर्युक्त समस्त चित्रण और विवरण पूर्णतः भारत के प्राचीन, मध्यकालीन, आधुनिक और आंचलिक इतिहास की दृष्टि से अधिकांशतः प्रामाणिक और इतिहास-सम्मत सिद्ध होती हैं। समानांतर, जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत घटित युद्धों, संबंधित कार्य-व्यापार और जंगनामा ग्रन्थों की प्राचीन वर्तमान तथा भावी सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था के संदर्भ में विशिष्ट प्रभाविता और प्रासंगिकता भी ऐतिहासिक और समीचीन तथ्यों के आधार पर संपुष्ट होती है।

जंगनामा काव्य-परंपरा इतिहास से घनिष्टम संबंद्ध काव्य-परंपरा है। अतः जंगनामा काव्य-परम्परा की यथार्थ-सृष्टि के सन्दर्भ में, कथावस्तु की इतिहास-सम्बद्धता प्रामाणिक और स्वयंसिद्ध है। जंगनामा के अंतर्गत प्रायः युद्ध के कारण तथा परिणाम के संदर्भ में प्रत्येक जंगनामाकार ने पूर्णतः इतिहास-सम्मत घटनाओं के प्रस्तुतीकरण के माध्यम से यथार्थ-सृष्टि का सम्यक अनुकरण किया है। जंगनामा काव्य-परंपरा की यथार्थ-सृष्टि के क्रम में, सैन्य तंत्र, सेना से संबंधित संगठनों, अंगों और उपांगों का पूर्णतः यथार्थपरक वर्णन प्राप्त होता है। उपर्युक्त क्रम में, चतुरंगिणी सेना की संरचना का, चतुरंगिणी सेना का युद्धक उपकरणों से सुसज्जित होकर युद्ध क्षेत्र की ओर प्रयाण का, युद्ध में प्रयोग होने वाले अस्त्रों-शस्त्रों का, योद्धाओं के सज्जित और युद्दोन्मत्त होकर रणभूमि की ओर प्रस्थान का तथा युद्ध हेतु प्रयाण के क्रम में मदिरापान की घटना आदि का भी विधिवत यथार्थ

और इतिहास सम्मत विवरण प्राप्त होता है। समानान्तर, जंगनामा काव्य-परंपरा की यथार्थ-सृष्टि के क्रम में, युद्ध नीति, व्यूह-रचना, युद्ध शैली, सैन्य गठबन्धन आदि का भी यथार्थ और पुष्ट संदर्भ प्राप्त होता है। काव्य-परंपरा के अंतर्गत युद्ध और युद्ध नीति के संदर्भ में, युद्ध-पूर्व, युद्ध काल और युद्ध के पश्चात कूटनीति और कूटनीतिक उपायों के यथानुकूल और यथार्थपरक प्रयोग का विधान भी प्राप्त होता है। जंगनामा काव्य- परंपरा के अंतर्गत तात्कालिक सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था के अकाट्य सत्य के रूप में सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराओं, प्रथाओं, मान्यताओं, विचारों और सम्भावनाओं की पृथक और विशिष्ट यथार्थ-सृष्टि गोचर होती है। जंगनामा काव्य-ग्रन्थों के अंतर्गत युद्ध-वर्णन के क्रम में युद्ध के वीभत्स और भयावह प्रतिचित्र तथा तत्कालीन राजनैतिक सत्ता और उससे संबंधित अवयवों के अंतर्गत घटित उतार-चढ़ाव का भी सूक्ष्म और यथार्थ चित्रण उपस्थित होता है। अतः उपर्युक्त आधार पर तथ्य स्वयंसिद्ध है कि जंगनामा काव्य-परम्परा के अन्तर्गत प्राप्य अधिकांश जंगनामा-ग्रन्थों में युद्ध, युद्धादि उपक्रमों तथा सम्बन्धित सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक संरचना के अंगों-उपांगों और सम्बन्धित तथ्यों के सन्दर्भ में यथार्थ और यथार्थ-सृष्टि स्वयंसिद्ध है।

जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत कथावस्तु के विन्यास क्रम में कथानक रुढि का अत्यंत महत्वपूर्ण संदर्भ प्राप्त होता है। ध्यातव्य है, प्राचीन, पौराणिक और मिथकीय कथानक रुढ़ियों का परंपरागत-विकास आदिकालीन और मध्यकालीन वीर-काव्य परंपरा से होता हुआ रुढ़ रूप में जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत प्रस्फुटित और गोचर होता है। प्रायः रीतिकालीन अधिकांश जंगनामाकारों ने कथानक रुढ़ियों का प्रयोग जहाँ एक ओर कथानक और विषयवस्तु की गति और चमत्कार-शक्ति के उद्भावक और उत्प्रेरक तत्त्व के रूप में किया है तो वहीं दूसरी ओर कथानक से संबंधित घटनाओं, चरित्रों और सम्बन्धित कृत्यों के संदर्भ में उपर्युक्त कथानक रुढ़ियों का प्रयोग विशिष्टता, अलौकिकता, दिव्यता, प्रभुता, तेज, शक्ति और ऐश्वर्य की विशिष्ट अभिव्यक्ति हेतु व्यंजना हेतु किया है। कहना न होगा, जंगनामा काव्य-परंपरा के अन्तर्गत सर्जना और निर्मिति के संदर्भ में कथानक रुढ़ियाँ पौराणिकता, मिथकता और ऐतिहासिकता को महत्वपूर्ण तत्त्व के रूप में

ग्रहण करती हैं। परिणामस्वरुप ऐतिहासिक, मिथकीय, पौराणिक अथवा मिश्र कथानक रुढ़ियों का प्रयोग और वैभिन्न उपर्युक्त काव्य परंपरा के अंतर्गत प्रामाणिक और स्वतः सिद्ध होता है।

जंगनामा काव्य-परंपरा युद्ध के सन्दर्भ में, राजनैतिक पृष्ठभूमि से कथा-सामाग्री ग्रहण करती है अतः जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत युद्ध और राजनैतिक चेतना का विशिष्ट और परिपक्व स्वरूप गोचर होता है। चूँकि जंगनामा विशुद्ध युद्ध-काव्य परंपरा है अतः जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत राजनैतिक चेतना के संदर्भ में विशुद्ध राजनैतिक चेतना का अभाव तथा युद्ध अथवा युद्ध से संबंधित आयामों के अंतर्गत ही राजनैतिक चेतना का सद्यः स्फुरण स्वयंसिद्ध है परिणामस्वरूप जंगनामा काव्य-परम्परा के अंतर्गत राजनैतिक चेतना समान्यतः प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में युद्ध-चेतना से संबंधित चेतना है अतः इसे रणनीतिक-राजनैतिक चेतना कहना अधिक उचित प्रतीत होता है। समानान्तर, जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत युद्ध नीति अर्थात युद्ध चेतना के क्रम में उत्कृष्ट नेतृत्व कौशल और उसकी प्रभाविता, विशिष्ट व्यूह-रचना अर्थात चतुर्दिक, द्विदिश, गुप्त और गुरिल्ला आक्रमण आदि के पर्याप्त प्रमाण प्राप्त होते हैं। काव्य-परंपरा के अंतर्गत युद्ध कोटि के सन्दर्भ में, जहाँ छापामार अथवा गुरिल्ला युद्ध, मल्लयुद्ध, कबंध युद्ध, द्वंद्व युद्ध आदि के यथार्थ प्रमाण प्राप्त होते हैं तो वहीं राजनैतिक उपक्रमों के सन्दर्भ में, राजनैतिक गठबंधन, कूटनीतिक कौशल, राजधर्म का सम्यक बोध, उत्कृष्ट राज्य संचालन और विदेश नीति विषयक पुष्ट प्रमाण भी प्राप्त होते हैं। कहना न होगा, जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत राजनैतिक-चेतना और युद्ध-चेतना के परस्पर सम्बद्ध और आश्रित होने के कारण अधिकांशतः राजनैतिक चेतना, युद्ध चेतना हेतु एक विशिष्ट अवयव अथवा उत्प्रेरक तत्त्व की भाँति उपस्थित और गोचर होती है।

ध्यातव्य है, जंगनामा काव्य-परंपरा का मुख्य उद्देश्य युद्ध-आख्यान है। अतः जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था का कोई विशिष्ट पृथक और सूक्ष्मातिसूक्ष्म स्वरूप वर्णित नहीं है तथापि जंग अथवा युद्ध के क्रम में सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना और संबंधित चेतना के विविध निकष गोचर होते हैं। जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत प्राप्य जंगनामा-ग्रन्थों में वैयक्तिक, पारिवारिक और सामाजिक प्रत्येक स्तरों पर वीरकर्म और

औदात्य गुणों की सहज व्याप्ति देखी जा सकती है। नैतिकता, मूल्यधारिता, आत्मसम्मान, वंशगौरव, राष्ट्राभिमान, शौर्य और तेज का सहज परिपाक जंगनामा काव्य-परंपरा की सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना का महत्वपूर्ण वैशिष्ट्य है। जंगनामा काव्य-परंपरा की सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना के सन्दर्भ में, वैयक्तिक स्तर पर राजा का प्रजा प्रेम, वात्सल्य, शरणागत के प्रति रक्षा भाव तथा नागरिकों के आचार, विचार, व्यवहार के संदर्भ में आस्तिकता, धार्मिकता, नैतिकता, मान, सम्मान, स्वाभिमान और बलिदान का विशेष वृतांत प्राप्त होता है। समानांतर, पारिवारिक स्तर पर जंगनामा काव्य परंपरा के अंतर्गत अधिकांशतः संयुक्त परिवार व्यवस्था के स्वरों की स्पष्ट झंकृति सुनाई देती है। संयुक्त परिवार व्यवस्था के अंतर्गत माता-पिता, पत्नी, पति, सासू, नन्द, पुत्र, पुत्री सभी को शौर्य भाव और विशिष्ट आभा से भासित देखा जा सकता है। सामाजिक-संरचना के क्रम में, जंगनामा काव्य-परंपरा का समाज वर्ग आधारित समाज है। जहाँ उच्च वर्ग के रूप में राजा शासक, क्षत्रिय योद्धाओं, पुरोहित, व्यापारी वर्ग आदि का तो निम्न वर्ग के रूप में भाट-चारण, बंदीजन, लोहार, सुनार, रंगरेजिन, नाई, कोल-भील आदि का आदि का आख्यान प्राप्त होता है। जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत उपर्युक्त चेतना के आधार पर ही विशिष्ट अधिकार और उत्तराधिकार भी निर्धारित होते हैं। उपर्युक्त संरचना और चेतना के आधार पर सामाजिक पिरामिड के शिखर पर अवस्थित शासक अथवा राजा के लिए राजधर्म अर्थात राज्य संचालन, प्रजा के पालन और रक्षण का बोध आदि कर्तव्य और उत्तर दायित्व सुनिश्चित होता है तो वहीं क्षत्रिय वर्ग के लिए राजा के सहयोगी और सैन्य दल के अवयव के रूप में स्वत्व, स्वाभिमान, वंश गौरव, राष्ट्र और प्रजा के आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, वैयक्तिक, पारिवारिक प्रत्येक आयाम से संबन्धित हितों की सुरक्षा और संरक्षा का उत्तरदायित्व निश्चित होता है। समानान्तर, क्षत्रिय वर्ग को राजा की सहायता के उपर्युक्त उपक्रम में घटित युद्ध में मृत्युपर्यंत शौर्य, तेज और पराक्रम का प्रदर्शन करते हुए सर्वोच्च बलिदान का अधिकार प्राप्त होता है। जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत वीर क्षत्राणी वर्ग के लिए वीर-कर्म के क्रम में मृत्यु को प्राप्त पति के शव के साथ सती होने का विशिष्ट विधान भी गोचर होता है। तथ्य स्वयंसिद्ध है, उपर्युक्त सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना के अंतर्गत वीर क्षत्राणी

पति की मृत्योपरांत निश्चय ही अग्निशिखा का आलिंगन करती है किंतु अप्रत्याशित आक्रमण की स्थिति में वह दृढ़ता पूर्वक शत्रु का सामना भी करती है। उपर्युक्त सामाजिक संरचना के सन्दर्भ में, वीर पुत्र और अल्पायु बालक के औदात्य, शौर्य और तेजपूर्ण कर्मों का भी पर्याप्त आख्यान जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत प्राप्त होता है।

ध्यातव्य है, जंगनामा काव्य परंपरा के अंतर्गत सांस्कृतिक चेतना के संदर्भ में, जीवन के आदि से लेकर अंत तक षोड़श सहित अन्यानेक संस्कारों का जीवन्त और सूक्ष्मतम विवरण प्राप्त होता है। जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत युद्ध, वीरकर्म, शौर्य और बलिदान को व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के संदर्भ में सर्वोच्च मूल्य के रूप में स्थापित किया गया है। इसी क्रम में युद्ध के समय, विवाह के समय और मृत्यु के समय पूर्ण और संपादित की जाने वाली विविध परंपराओं, प्रथाओं के सूत्र भी प्राप्त होते हैं। इसके अतिरिक्त जंगनामा काव्य-परंपरा के संदर्भ में राष्ट्र प्रेम, जातिगत-वर्गगत अस्मिता, पितृ, देव और मातृभूमि विषयक ऋण आदि के भी विशेष संदर्भ प्राप्त होते हैं। कहना न होगा, उपर्युक्त समस्त तथ्यों, तत्त्वों के आलोक में जंगनामा काव्य-परंपरा की सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना प्राचीन भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना के अधिकांश गुणों और लक्षणों को धारण करती है।

जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत शौर्य एवं स्वातन्त्र्य चेतना का राष्ट्रीय और स्थानीय संदर्भ प्राप्त होता है। काव्य-परंपरा के अंतर्गत शौर्य एवं स्वातन्त्र्य चेतना के उपर्युक्त सन्दर्भ में वैयक्तिक, धार्मिक, राजनैतिक तथा आर्थिक चेतना और अधिकार बोध की प्राप्ति अत्यंत महत्वपूर्ण है। कहना न होगा, जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत शौर्य और स्वातन्त्र्य चेतना का उपर्युक्त बोध वैयक्तिक, सामाजिक, पारिवारिक, वर्ग और समूहगत तथा राष्ट्रगत प्रत्येक प्रतिमानों के अंतर्गत सहज गोचर होता है। ध्यातव्य है, जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत स्वातन्त्र्य-चेतना के वैयक्तिक परिप्रेक्ष्य के अंतर्गत जहाँ जंगनामा के पात्रों और चरित्रों के दैहिक और मानसिक आचार, विचार और व्यवहार के संदर्भ में विशिष्ट चेतना और बोध का परिपाक प्राप्त होता है तो वहीं जंगनामा के पात्रों और चरित्रों के जीवन और कर्म से सम्बद्ध प्रत्येक क्षेत्र के अंतर्गत उपर्युक्त चेतना के क्रम में ही

विशिष्ट स्वायत्तता और अधिकार बोध की व्याप्ति भी स्वयंसिद्ध है। समानान्तर, जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत स्वातन्त्र्य-चेतना के धार्मिक परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में जहाँ धर्म, धार्मिक-व्यवस्था, धार्मिक मत-मान्यतायें, आचार-विचार, व्यवहार और धार्मिक आस्था के केंद्र-धर्म स्थलों की स्वायत्तता और स्वतंत्रता के संबंध में विशिष्ट चेतना और बोध चिंतन के केंद्रीय तत्त्व और विषय के रूप में स्वीकृत है तो वहीं जंगनामा काव्य-परंपरा के संदर्भ में, स्वातंत्र्य-चेतना के राजनैतिक परिप्रेक्ष्य के अंतर्गत राज्यसत्ता पर अधिकार, राजसत्ता की प्रभुता की रक्षा, राजसत्ता के शक्ति स्रोत का संरक्षण तथा राजसत्ता की संप्रभुता की चेतना और बोध का विशेष संदर्भ प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त, जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत स्वातन्त्र्य-चेतना के आर्थिक परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में अर्थ, अर्थव्यवस्था और आर्थिक संसाधनों पर स्वायत्तता, स्वतंत्रता और संप्रभु अधिकार का बोध काव्य-परंपरा का केंद्रीय पक्ष है तो वहीं स्वातन्त्र्य-चेतना के इसी क्रम में, पारिवारिक और सामाजिक जीवन के अंतर्गत भी उपर्युक्त चेतना का वैयक्तिक, राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक प्रत्येक आयाम और संदर्भ सहज पुष्ट, प्रमाणित, उपस्थित और गोचर होता है। कहना न होगा, जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत उपर्युक्त स्वातन्त्र्य चेतना के क्रम में वीर-भाव और वीर-कर्म की घटना सहज और स्वयंसिद्ध है।

ध्यातव्य है, जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत उपर्युक्त स्वातन्त्र्य-चेतना के आलोक में घटित युद्ध अथवा वीरकर्म के क्रम में शौर्य-चेतना का भी वैयक्तिक, सामाजिक, पारिवारिक, समूहगत, वर्गगत, जातिगत और राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य प्राप्त होता है। जंगनामा काव्य परंपरा के अंतर्गत वैयक्तिक शौर्य-चेतना के संदर्भ में जंगनामा के चरित्रों के मानसिक, कायिक, वाचिक आचार, विचार और व्यवहार के अंतर्गत विशिष्ट वीर-भाव और वीर कर्म की उपस्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण है। जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत वैयक्तिक स्वातन्त्र्य चेतना के क्रम में, राजसत्ता के शीर्ष पर अवस्थित राजा, राजपरिवार तथा राजवंश से संबंधित व्यक्तित्व, सेना के नेतृत्वकर्ता सेनापति और सैन्य टुकड़ी का संचालन करने वाले वीर योद्धाओं के आचार, विचार और व्यवहार अंतर्गत शौर्य चेतना की प्रतिपुष्टि होती है। समानान्तर, जंगनामा काव्य-परंपरा के राजा, राजसत्ता और राजपरिवार से

संबंधित विशिष्ट व्यक्तियों, सेना के नेतृत्वकर्ता सेनापतियों की विशिष्ट वैयक्तिक शौर्य-चेतना के संदर्भ में अंतर्गत राज्य, राष्ट्र, प्रजा की स्वतंत्रता और अस्मिता की रक्षा का भाव अत्यंत महत्वपूर्ण है। समानान्तर, जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत पारिवारिक प्रतिमान के संदर्भ में, शौर्य-चेतना की व्याप्ति परिवार के प्रति सदस्य में गोचर होती है अर्थात जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत पत्नी, पति, माता, पुत्र, सासू, नंद, देवर, देवरानी सभी विशिष्ट पराक्रम और शौर्य चेतना को अपने आचार, विचार और व्यवहार के अंतर्गत धारण और प्रमाणित करते हैं। सामाजिक-संरचना के सन्दर्भ में, जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत सामाजिक-संरचना के द्वितीय स्तर और राजनैतिक संरचना के सर्वोच्च स्तर पर अवस्थित क्षत्रिय वर्ग को शासन कार्य, राजनैतिक सत्ता, राज्य और प्रजा के सुरक्षा और संरक्षण का उत्तरदायित्व प्राप्त था अतः राज्य, प्रजा और शासन सत्ता की सुरक्षा, विस्तार और संरक्षण के संदर्भ में उपर्युक्त क्षत्रिय वर्ग में शौर्य-चेतना का विशिष्ट गुणधर्म, उपक्रम और आख्यान प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त, जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत समूह और जातिगत शौर्य-चेतना के संदर्भ में, क्षत्रिय वर्ग तथा योद्धा वर्ग के सहायक वर्गों यथा-कोल भील आदि जनजातीय समूहों के संदर्भ में शौर्य सृष्टि का विशिष्ट आख्यान भी उल्लेखनीय है।

जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत शौर्य और स्वातंत्र्य-चेतना के क्रम में अभूतपूर्व, अलौकिक वीरता और पराक्रम का प्रदर्शन भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण तथ्य है। जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत शौर्य और स्वातंत्र्य-चेतना चेतना के संदर्भ में न केवल योद्धा नायकों के कायिक, मानसिक और वाचिक शौर्य पराक्रम का वर्णन युद्ध अर्थात वीर कर्म, सैन्य संचालन, नेतृत्व और प्रेरणा के संदर्भ में प्राप्त होता है अपितु समनानंतर, प्रतिपक्षी सेना नायकों और सैन्य नेतृत्वकर्ताओं के आचार, विचार, व्यवहार और कर्म के अंतर्गत भी शौर्य और स्वातंत्र्य-चेतना की सूक्ष्मतम अभिव्यक्ति सहज संभव हुई हैं। जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत प्रायः युद्ध के अंतर्गत शौर्य-चेतना की अलौकिकता की पुष्टि के क्रम में कबंध युद्धादि की मानवेत्तर घटना भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। ध्यातव्य है, जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत शौर्य चेतना, स्वातन्त्र्य चेतना के परिणाम के रूप में प्रस्फुटित होती है तथा स्वातन्त्र्य चेतना के आलोक में स्वतंत्रता, स्वायत्तता और अधिकार की

प्राप्ति हेतु घटित युद्ध की घटना के अंतर्गत शौर्य चेतना, स्वातन्त्र्य चेतना हेतु स्वतंत्रता, स्वायत्तता और अधिकार की प्राप्ति के महत्वपूर्ण साधन के रूप में प्रस्तुत और उपस्थित होती है। कहना न होगा, जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत स्वातन्त्र्य-चेतना और शौर्य-चेतना परस्पर एक दूसरे से घुली-मिली गोचर होती है तथा युद्ध के कारण, परिणाम और लक्ष्य को नियमित, नियंत्रित और निर्धारित करती हैं।

ध्यातव्य है, जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत कथानक-विन्यास, चरित्र-विन्यास, भाषिक सृष्टि, छंदात्मकता और ध्वन्यतमकता काव्य-परंपरा के कला-पक्ष की द्योतक है। ध्यातव्य है, जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत कथानक-विन्यास की दृष्टि से विशिष्ट विविधता और औदात्य गोचर होता है। कहना न होगा, जंगनामा काव्य-परंपरा कथावस्तु और कथानक-विन्यास के क्रम में एकरूपता से अत्यल्प भी ग्रसित प्रतीत नहीं होती है अपितु जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत कथा-विन्यास के क्रम में कथावस्तु और कथाकथन विषयक महत्वपूर्ण वैविध्य और वैभिन्न दृष्टिगत होता है। जंगनामा काव्य-परम्परा के सन्दर्भ में, अणीराय कृत 'जंगनामा' के अंतर्गत जहाँ एक ओर सहज प्रवाहमयी घटना और कथानक विन्यास प्राप्त होता है तो वहीं श्रीधर कृत 'जंगनामा' और हरिनाम कृत जंगनामा 'केसरी सिंह-गुण रासो' के अंतर्गत कथानक और कथातन्त्र का भटकाव, उलझाव तथा घटना-प्रवाह में कदाचित सायास अवरोध गोचर होता है। जंगनामा काव्य-परम्परा के अंतर्गत अणीराय कृत 'जंगनामा' सुखान्तक जंगनामा है तो वही चन्द्रशेखर कृत जंगनामा-प्रबन्ध 'हमीर हठ', ननकऊ सिंह कृत 'जंगनामा', और हरिनाम कृत जंगनामा 'केसरी सिंह-गुण रासो' दुखान्तक जंगनामा है। समानांतर, श्यामनारायण पाण्डेय कृत जंगनामा-प्रबंध 'हल्दीघाटी' का आदि सुखात्मक, मध्य दुखात्मक और अन्त्य सुखात्मक है। जंगनामा काव्य-परम्परा के सन्दर्भ में, ननकऊ सिंह कृत 'जंगनामा', हरिनाम कृत जंगनामा 'केसरी सिंह-गुण रासो' और चन्द्रशेखर बाजपेयी कृत प्रबंध काव्य 'हमीर हठ' के अंतर्गत जहाँ एक ओर कथानक का विस्तार बहुआयामी है। यहाँ युद्ध की आधिकारिक कथा के अतिरिक्त अन्यानेक प्रासंगिक कथाओं का संगठन भी प्राप्त होता है तो वही श्यामनारायण पाण्डेय कृत जंगनामा-प्रबंध 'हल्दीघाटी' तथा

अणीराय कृत 'जंगनामा' के अंतर्गत युद्ध विशेष को लक्ष्य करती मुख्यकथा अधिक प्रभावी गोचर होती है। मुख्य कथा की अपेक्षा प्रासंगिक कथा का महत्व या तो इसमें अत्यंत न्यून है या तो है ही नहीं। इसी क्रम में, जंगनामा काव्य-परम्परा के श्रीधर कृत 'जंगनामा' में जहाँ एक ओर योद्धाओं के कायिक, वाचिक और आहार्य को लक्ष्य करने के उपक्रम में कथानक के मूल भाव को केंद्र से विचलित होते हुए सहज देखा जा सकता है तो वही प्रबंध-काव्य 'हल्दीघाटी' और 'हमीर हठ' पूर्णतः युद्ध और युद्ध नायकों को केंद्र के रूप में स्वीकार करते हुए विशिष्ट भाव-भूमि का अनुकरण करता हुआ विकसित होता है।

जंगनामा काव्य-परंपरा की कलात्मक सृष्टि के अंतर्गत चरित्र विन्यास के क्रम में, नायकों का चरित्र-विन्यास अन्य पात्रों के चरित्र के विन्यास अधिक सुगठित, औदात्यपूर्ण और स्वाभाविक गोचर होता है। काव्य परम्परा के अन्तर्गत नायकों के चरित्र अंतर्गत वीरता, पराक्रम, धर्मिकता, त्याग, बलिदान, प्रजा और मातृभूमि से प्रेम, कूटनीतिक, राजनीतिक और रणनीतिक कौशल आदि मानवीय और विशिष्ट उदात्त गुणों का विन्यास और विकास प्राप्त होता है। समानान्तर, जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत प्रायः नायक के चरित्र के अंतर्गत युद्ध अथवा वीर-कर्म के सन्दर्भ में अलौकिकता का अंश भी गोचर होता है। कहना न होगा, जंगनामा काव्य-परंपरा के सन्दर्भ में कदाचित नायक के चरित्र के अंतर्गत अलौकिकता का यह समावेश नायक को जंगनामा काव्य परंपरा के पूर्णतः अनुकूल नायक के रूप में विन्यसित और विकसित करने में सहायक ही सिद्ध हुआ है। इसके अतिरिक्त जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत प्रतिनायक और अन्य सहयोगी चरित्रों की सृष्टि और विन्यास का विधान भी प्राप्त होता है तथा कथावस्तु के सन्दर्भ में, यह विधान यद्यपि अनुकूल भी गोचर होता है तथापि काव्य-परंपरा के अंतर्गत प्रतिनायक अथवा अन्य सहयोगी चरित्रों का विन्यास और विकास अपेक्षाकृत न्यून है। कहना न होगा, नायक केंद्रित काव्य-परंपरा होने के कारण उपर्युक्त असंतुलन का औचित्य स्वयंसिद्ध है।

जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत चरित्र-सृष्टि के क्रम में, नायक के उदात्त और अपेक्षाकृत स्थिर चरित्र के समानान्तर निम्न कोटि और अस्थायित्व से युक्त अर्थात अस्थिर चरित्र सृष्टि भी प्राप्त

होती है। काव्य-परंपरा के अंतर्गत प्रतिनायक तथा उसके सहायक और सहयोगी चरित्रों का विन्यास उपर्युक्त कोटि का महत्वपूर्ण उदाहरण प्रमाण है। ध्यातव्य है, अपेक्षाकृत निम्न और अल्प विकसित होने के बावजूद वीरता, शौर्य,पराक्रम, युद्ध कौशल, युद्ध नीति, राजनीति और कूटनीति विषयक कौशल आदि औदात्य का विशेष परिपाक भी उपर्युक्त कोटि के प्रतिनायकों और पात्रों के चरित्र-विन्यास के क्रम में प्राप्त होता है। समानांतर, नायक पक्ष के योद्धाओं के चरित्र-विन्यास के क्रम में सहायक चरित्रों में यद्यपि नायकों के अनुकूल सामान उदात्त गुणधर्म की प्राप्ति होती हैं तथापि इनका चरित्र-विन्यास भी अल्प विकासित गोचर होता है।

चरित्र विन्यास के इसी क्रम में, जंगनामा कव्य-परंपरा के अंतर्गत सहायक-पात्र के रूप में, वीर पुत्र, राजपुत्र, वीर बालाओं, क्षत्राणियों और रानियों के चारित्रिक-विन्यास में भी विशिष्ट और औदात्य के संदर्भ प्राप्त होते हैं। ध्यातव्य है, जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत चरित्र-विन्यास के क्रम में प्रायः मात्रात्मकता और गुणात्मकता के मध्य का विशिष्ट संतुलन भी सहज संभव हुआ है तथापि चरित्र-विन्यास के क्रम में कुछ जंगनामा ग्रन्थों में गुणात्मकता का आग्रह अधिक प्राप्त होता है, श्यामनारायण पाण्डेय कृत प्रबंध-काव्य ‘हल्दीघाटी’ इसका महत्वपूर्ण उदाहरण है तो कुछ जंगनामा काव्यों के अंतर्गत चरित्र-विन्यास के क्रम में मात्रात्मकता का आग्रह विशेष है, श्रीधर कृत ‘जंगनामा’ और ननकऊ सिंह कृत ‘जंगनामा’ चरित्र और पात्र बाहुल्य जंगनामा-काव्य के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इसके अतिरिक्त, जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत कुछ जंगनामा काव्य में चरित्र विन्यास प्रायः अस्थिर और उलझाव पूर्ण गोचर होता है, हरिनाम कृत ‘केसरी सिंह-गुण रासो’ तथा श्रीधर कृत ‘जंगनामा’ के अंतर्गत नायक के चरित्र में अस्थायित्व की प्रवृत्ति सहज दृष्टिगत होती है, तो कुछ जंगनामा काव्य के अंतर्गत चरित्र-विन्यास प्रायः स्थायित्व से युक्त और रैखिक प्रतीत होता है तथा इनके नायकों के चरित्र में स्थायित्व की प्रवृत्ति अपेक्षाकृत अधिक दिखाई देती है। प्रबंध-काव्य ‘हमीर हठ’ और ‘हल्दीघाटी’ का चरित्र-विन्यास, इसका उत्कृष्ट उदाहरण-प्रमाण हैं।

जंगनामा काव्य-परंपरा की कलात्मक सृष्टि के अंतर्गत भाषिक-सृष्टि का भी महत्वपूर्ण संदर्भ प्राप्त होता है। जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत कथानक और कथावस्तु के अनुरूप भाव

और अर्थ उत्पत्ति के विशिष्ट माध्यम के रूप में भाषागत विशिष्टता और विविधता स्वयंसिद्ध है। ध्यातव्य है, जंगनामा काव्य-ग्रन्थों की भाषिक सृष्टि के अंतर्गत शब्द प्रयोग के क्रम में प्रायः डिंगल, पिंगल, अवधी, ब्रज आदि भाषाओं के शब्दों, पदों और पदवालियों के प्रयोग के साथ-साथ स्थानीय बोलियों और भाषाओं के प्रचलित शब्दों, पदों और पदवालियों के प्रयोग का विधान भी प्राप्त होता है। समानांतर, भारतीय भाषाओं, बोलियों के अतिरिक्त अन्य देशज, विदेशज भाषाओं यथा फारसी, उर्दू, पंजाबी, राजस्थानी आदि भाषाओं के शब्दों, पदों, पदवालियों के प्रयोग का प्रमाण भी प्राप्त होता है। भाषा और बोलीगत उपर्युक्त वैविध्य के क्रम में प्रायः जंगनामा की भाषिक-संरचना के अंतर्गत शब्दों के तद्भव, देशज, विदेशज और अत्यल्प तत्सम रूपों के प्रयोग का विशिष्ट विधान तथा समानांतर, लोकोक्तियों, मुहावरों आदि का भी अनेक स्थानों पर यथोचित प्रयोग गोचर होता है। जंगनामा काव्य-परंपरा की भाषिक-सृष्टि के संदर्भ में वाक्यगत संरचना के अंतर्गत भी उपर्युक्त वैशिष्ट्य और वैविध्य सहज दृष्टिगोचर है। तथ्य स्वयंसिद्ध है, विशिष्ट प्रवृत्ति और प्रकृति के कारण जंगनामा काव्यों की भाषा जहाँ एक ओर अपेक्षाकृत दुरूह और उलझावपूर्ण गोचर होती है तो वहीं दूसरी ओर सहज सरल और अर्थोत्पत्ति की दृष्टि से उत्कृष्ट भाषिक संरचना के प्रमाण भी जंगनामा काव्य के अंतर्गत प्राप्त होते हैं। 'हल्दीघाटी' प्रबंध काव्य की वाक्यगत संरचना उपर्युक्त कोटि के वाक्य विन्यास का अत्यंत महत्वपूर्ण उदाहरण है। जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत काव्य के बहिरंग और अंतरंग पक्ष के आधार पर रस, छंद, ध्वनि, और अलंकारों के प्रयोग के क्रम में भी औचित्यपूर्ण विविधता और विशिष्टता की व्याप्ति स्वाभाविक है। जंगनामा काव्य-परंपरा की भाषिक सृष्टि के संदर्भ में अलंकार योजना के अंतर्गत प्रायः शब्दालंकार, अर्थालंकार तथा रस योजना के अंतर्गत शांत रस, भक्ति रस, वीर रस, अद्भुत रस, वीभत्स रस, रौद्र रस आदि का सहज परिपाक कथानक की अनुकूलता के साथ गोचर प्राप्त होता है। धन्यात्मकता के क्रम में, वीर काव्य परंपरा होने के कारण काव्य की अभिधा शब्द शक्ति अर्थात अभिधात्मकता का विशिष्ट आग्रह जंगनामा काव्य-परम्परा के अंतर्गत स्वाभाविक और सद्यः गोचर है। इसके अतिरिक्त जंगनामा काव्य-परंपरा के संदर्भ में, जंगनामा काव्य में प्रयुक्त छंद विधान का पूर्ण परिपाक और

वैविध्य के साथ गोचर होता है। छंद प्रयोग के क्रम में जंगनामा काव्य-परम्परा के अंतर्गत मात्रिक और वर्णिक छंदों के विविध रूपों का कथानक और कथावस्तु के भावानुकूल प्रयोग प्राप्त होता है। काव्य परंपरा के प्रायः प्रत्येक जंगनामाकार नें कथानक-विन्यास और अभिव्यक्ति के क्रम में काव्य की लयात्मकता और अभिधात्मकता को लक्ष्य करते हुए भाषा और भाव के अनुकूल मात्रिक अर्थात अर्ध मात्रिक सम मात्रिक, विषम मात्रिक तथा विविध वर्णिक छंदों का प्रयोग किया है। जंगनामा काव्य-परंपरा के संदर्भ में, उपर्युक्त विशिष्ट छन्द-विधान काव्य के चारुत्व, कलात्मक उत्कर्ष, भाव और अर्थ उत्पत्ति के एक अत्यंत महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में स्वाभाविक, वांछनीय और ग्राह्य हैं।

जंगनामा काव्य-परंपरा के संदर्भ में, शोधगृहीत जंगनामा काव्य में प्रयुक्त छंद विधान वैविध्य और वैशिष्ट्य का द्योतक हैं। जंगनामा काव्य में छन्द प्रयोग के क्रम में, जहाँ मात्रिक छन्द के अंतर्गत दोहा, सोरठा, गीतिका, हरिगीतिका, चौपाई, छप्पय, कुण्डलिया, त्रिभंगी, रास, आल्हा अथवा वीर आदि विविध कोटि के छन्द प्राप्त होते हैं तो वही दूसरी ओर वर्णिक छन्द के अंतर्गत तोमर, सवैया, कवित्त, अरिल्ल, त्रोटक, भुजंगी, पउड़ी आदि विविध कोटि के छन्द प्राप्त होते हैं। जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत प्राप्य ग्रन्थों में उपर्युक्त छंद प्रयोग के क्रम में, श्रीधर कृत जंगनामा में मुख्यतः 15 छंदो का प्रयोग प्राप्त होता है। जंगनामा के अवलोकन के क्रम में श्रीधर की मात्रिक छंद प्रियता स्पष्ट गोचर होती है। जंगनामा के अंतर्गत दोहा, तोमर, छंद, हरिगीतिका पादाङकुल, अधमा, छप्पय, मधुसार, भुजंगप्रयात, अर्धक, गीत, हुलास, कवित्त, हीर और अमृतध्वनि आदि छन्द का प्रयोग महत्वपूर्ण है। समानान्तर, अणीराय कृत 'जंगनामा' के अंतर्गत मुख्यतः दोहरा अर्थात दोहा, सोरठा, कवित्त, सवैया, छप्पय, भुजंगप्रयात, गीता, चैपाई, तोटक, अडिल, मनहर, पउड़ी रास आदि छन्दों का प्रयोग प्राप्त होता है। अणीराय कृत जंगनामा काव्य की भाषा आवेग के साथ-साथ ओज से भी परिपूर्ण है अतएव ग्रंथ के अन्तिम कुछ छन्दों की भाषा पंजाबी होने के पश्चात भी छन्द-विधान बहुत ही गम्भीरता के साथ प्रवाहमयी एवं ओजस्वी है। समानान्तर, छंद प्रयोग के संदर्भ में, हरिनाम कृत केसरी सिंह-गुण रासों के अंतर्गत भी छंदों का विशिष्ट वैविध्य

गोचर होता है। ध्यातव्य है, केसरी सिंह गुणरासों के कवि हरिनाम पारीक काव्यशास्त्र के मर्मज्ञ तथा व्याकरण, छन्द, अलंकार एवं रस आदि काव्यशास्त्र की समस्त विधाओं में निष्णात थे। अतः जंगनामा काव्य गुणरासों में छन्दों का प्रचुर और अधिकारपूर्वक प्रयोग प्रमाणित होता है। जंगनामा में जंगनामाकार द्वारा छप्पय, सोरठा, हनूफाल, दोहा, भ्रमर, मोतीदाम, कुसुमावती, त्रिभंगी, अर्द्धनाराच, पद्धरी, भुजंगप्रयात, तोटक, सवैया, कुण्डलियाँ, रामराज, वेअक्खरी, भ्रमरावली, हीरावली, नाराच, हरिगीतिका, चोसरा, मंजु, भुजंगी आदि विविध और विशिष्ट छंदों का प्रयोग प्राप्त होता है। इसी क्रम में, जंगनामा-प्रबन्ध 'हमीर हठ' के अंतर्गत भी छन्दों का वैशिष्ट्य और बाहुल्य गोचर होता है। प्रबंध में कवि द्वारा दोहा, कवित, सोरण, चैपाइ, सवैया, भूलना, त्रिभगी, भुजंगप्रपात छप्पय, पद्धरी, तोटक, मोतीदाम, आदि छन्दों का प्रयोग किया गया है। जंगनामा प्रबन्ध हमीर हठ की ही भाँति ननकऊ सिंह कृत अवधी जंगनामा ग्रंथ में भी दोहा, कवित्त सोरण, सवैया, चैपाई, भुजंगप्रयात, त्रोटक, मोटनक, गंगोदक, चन्द्रकला, श्लोक, नाराच, पद्धटिका, चामर, हरिलीला, प्रज्युल्या, प्रजुलिक, गीतिका, मालिका आदि छन्दों का औचित्यपूर्ण प्रयोग प्राप्त होता है। प्रबंध काव्य हल्दीघाटी के अंतर्गत छन्द प्रयोग के क्रम में, मात्रिक एवं वर्णवृत्त, दोनों ही कोटि के छन्दों का प्रयोग प्राप्य है तथापि मात्रिक छन्द का बाहुल्य स्व्यंसिद्ध है। 'मात्रिक छन्द वह है जिसके प्रत्येक पद में केवल मात्राओं की संख्या का प्रमाण हो, अक्षर चाहे जितने हों। कहना न होगा, विषय सामग्री के अनुरूप मात्रिक छन्द के औचित्य और अनूकूलता के कारण प्रबंध के अंतर्गत प्रबन्धकार को मात्रिक छन्द ही अधिक प्रिय है अतः 'हल्दीघाटी' में मत्तसवैया, ताटंक, सार, वीर, चैपई, पद्धरि, पदपादाकुल, सखी आदि, मात्रिक छदों का स्वाभाविक प्रयोग प्राप्त होता प्रबंध काव्य में प्रबन्धकार द्वारा वर्णिक छन्दों का प्रयोग कम ही किया गया है। प्रबंध काव्य हल्दीघाटी के अंतर्गत छंदों का प्रयोग रसानुकूलता का द्योतक है। कवि द्वारा प्रबंध में रस के विपरीत छन्दों का प्रयोग नहीं हुआ है। कहना न होगा, शब्द, पद, वाक्य, रस, छंद अलंकार, शब्द शक्ति आदि के उचित और अनुकूल प्रयोग के कारण जंगनामा काव्य की भाषिक सृष्टि विशिष्ट

अर्थवत्ता और गुणवत्ता से संपृक्त गोचर होती है। समानांतर, काव्य के भाव पक्ष और अर्थोत्पत्ति के क्रम में वांछनीयता और अनुकूलता को भी पुष्ट करती है।

जंगनामा-काव्य परम्परा के अन्तर्गत की कथावस्तु और कथानक-विन्यास के स्तर पर कल्पना और इतिहास का मिश्रित स्वरूप प्राप्त होता है। ध्यातव्य है, काव्य-परम्परा के अधिकांश ग्रन्थों के अंतर्गत जहाँ कथावस्तु की यथार्थवत्ता पूर्णपुष्ट होती है तो वही 'वीर-सतसई' जैसे जंगनामा-ग्रन्थ की कथावस्तु के अंतर्गत कल्पना का बाहुल्य स्वयंसिद्ध है। समानान्तर, जंगनामा काव्य-परम्परा के अंतर्गत नायक, प्रतिनायक और अन्य सहयोगी पात्रों की चरित्र-सृष्टि के क्रम में भी यथार्थ और कल्पना के मध्य का विशिष्ट द्वन्द्व गोचर होता है। ध्यातव्य है, जंगनाम-काव्य परम्परा के अन्तर्गत जहाँ जंगनामा-प्रबन्ध ‘हल्दीघाटी’, ननकऊ सिंह कृत ‘जंगनामा’ तथा श्रीधर कृत ‘जंगनामा’ के अंतर्गत जहाँ चरित्र-विन्यास के क्रम में यथार्थ-सृष्टि गोचर होती है तो वहीं जंगनामा-ग्रन्थ 'वीर-सतसई' का चरित्र-विन्यास पूर्णतः काल्पनिक ही है। समानान्तर, जंगनामा-काव्य परम्परा के अंतर्गत जंगनामा के घटनाक्रम के स्तर पर भी यथार्थ और कल्पना का द्वन्द्व प्राप्य है। ध्यातव्य है, जंगनामा काव्य-परम्परा के अंतर्गत जहाँ एक ओर जौहर आदि अन्यानेक घटनाओं के संदर्भ में घटनाक्रम की ऐतिहासिकता और यथार्थवत्ता पूर्णतः प्रमाणित होती है तो वही दूसरी ओर युद्ध में वीर पति के बलिदान के पश्चात सती होने के क्रम में पत्नी का उपर्युक्त प्रतिकूल परिस्थिति में भी सज्जित होना, श्रृंगार धारण करना और प्रसन्नचित अग्निशिखा की ओर प्रस्थान करना आदि अनेक घटनांश मिथक, रूढ और कल्पना जन्य ही अधिक प्रतीत होते हैं।

जंगनामा काव्य-परम्परा विशुद्ध युद्ध-काव्य परम्परा है। अतः जंगनामा-काव्य परम्परा के अंतर्गत युद्ध, युद्ध के कारण तथा युद्ध के परिणाम के संबंध में भी यथार्थ और कल्पना का द्वन्द्व स्वयंसिद्ध है। ध्यातव्य है, जंगनामा काव्य-परम्परा के अंतर्गत अधिकांश जंगनामा-ग्रन्थों में जहाँ युद्ध, युद्ध के कारण तथा युद्ध के परिणाम के संबंध में भी यथार्थवत्ता और ऐतिहासिकता प्रमाणित होती है तो वहीं दूसरी ओर कुछ जंगनामा-ग्रन्थों के अंतर्गत युद्ध, युद्ध के कारण तथा युद्ध के परिणाम के संबंध में, आंशिक घटनाओं और प्रकरणों के सन्दर्भ में कल्पनाजन्यता स्वयमसिद्ध हैं।

ध्यातव्य है, उपर्युक्त दृष्टि से जंगनामा-प्रबन्ध ‘हल्दीघाटी’, ननकऊ सिंह कृत ‘जंगनामा’, श्रीधर कृत ‘जंगनामा’ अरणी राय कृत ‘जंगनामा’ तथा ‘जंगनामा-केसरी सिंह गुणरासो’ यथार्थवत्ता और ऐतिहासिकता का अनुसरण करते हैं तो वहीं जंगनामा ‘वीर-सतसई’, जंगनामा-प्रबन्ध ‘हमीर हठ’ आदि के अंतर्गत कल्पना का प्रभाव और पुट प्राप्त होता है। जंगनामा-काव्य परम्परा के अंतर्गत युद्ध-चेतना के संदर्भ में सैन्य-संरचना, सैन्य-नेतृत्व, व्यूह रचना, युद्ध शैली, आदि के स्तर पर भी यथार्थ और कल्पना का द्वन्द्व गोचर होता है। ध्यातव्य है, जंगनामा काव्य-परम्परा के अंतर्गत युद्धान्तर्गत जहाँ एक ओर मल्ल-युद्ध शैली का प्रयोग यथार्थसृष्टि का महत्वपूर्ण उदाहरण-प्रमाण है तो वहीं दूसरी ओर युद्ध और शौर्य चेतना के क्रम में कबन्ध युद्ध की घटना और युद्ध शैली इतिहास आदधृत होने के बावजूद पूर्णतः मिथकीय, रूढ और कल्पना जन्य घटना ही हैं। समानान्तर, जंगनामा-प्रबंध 'हल्दीघाटी' के युद्धान्तर्गत जहाँ एक ओर छापामार युद्ध शैली के संदर्भ में चतुर्दिक आक्रमण, द्विदिश आक्रमण, गुप्त आक्रमण, आंशिक आक्रमण आदि के क्रम में विशेष व्यूह-रचना के यथार्थ प्रमाण प्राप्त होते हैं तो वही दूसरी ओर जंगनामा 'वीर-सतसई' के नअन्तर्गत घटित युद्ध और शौर्य चेतना के क्रम में व्यूह रचना के महत्व को पूर्णतः नकारा गया है तथा युद्ध की घटना के अंतर्गत योद्धा में अलौकिक शौर्य, तेज और पराक्रम की स्थापना के क्रम में व्यूह-रचना, सैन्य-संगठन, व्यूह रचना आदि की आवश्यकता को योद्धा के काल्पनिक वीर-कर्म से स्थानापन्न करने का अनावश्यक प्रयास किया गया है। इसी क्रम में, जंगनामा-काव्य परम्परा के अंतर्गत शौर्य-सृष्टि के स्तर पर भी यथार्थ और कल्पना का द्वन्द्व दृष्टिगत होता है। ध्यातव्य है, जंगनामा काव्य-परम्परा के अंतर्गत युद्ध और वीर-कर्म के क्रम में जहाँ यौद्धाओं के शौर्य, अद्वितीय पराक्रम, तेज, युद्ध-कौशल, अतुलनीय शक्ति, मृत्युपर्यन्त युद्ध और प्रसन्नचित बलिदान के अन्यानेक ऐतिहासिक और यथार्थ प्रतिचित्र प्राप्त होते हैं तो वहीं युद्ध के क्रम में बलिदान के पश्चात सूर्यलोक में वीर-योद्धाओं के स्वागत, अप्सराओं का उनके शौर्य और तेज पर मुग्ध और सम्मोहित होने, बलिदानोपरांत उस लोक में योद्धा और सती के परस्पर पुनर्मिलन और अनंत सानिध्य और सहभाग आदि अनेक आख्यान पूर्णतः कवि-कल्पना की उपज और मिथक ही अधिक हैं।

जंगनामा-काव्य, युद्ध-काव्य के रूप में मुख्यतः शक्ति-पूरित काव्य है। शक्ति-काव्य के रूप में, जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत शक्ति-प्रयोग और शक्ति की प्रकृति की दृष्टि से मुख्यतः शारीरक-शक्ति, बौद्धिक-शक्ति, मानसिक-शक्ति, राजैतिक-शक्ति, आर्थिक-शक्ति, कूटनीतिक-शक्ति, संस्कृतिक-शक्ति, नैतिक-शक्ति आदि का आख्यान और उद्धरण प्राप्त होता है। समानांतर, शक्ति-काव्य के रूप में, जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत प्राप्य अधिकांश जंगनामा ग्रन्थों में प्रायः शक्ति-स्रोत के रूप में वैयक्तिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक वैचारिकी और भाव बोध दृष्टिगत होता है तथा उपर्युक्त वैचारिक भाव-बोध से संपृक्त युयुत्सु अल्पायु वीर-बालक, राजा, सेनानायक और सैनिक, नायक और प्रतिनायक, माता, सास, ननद, पत्नी और देवर, सेवक, सैन्य गठबन्धन तथा सम्प्रभु राज-सिंहासन में प्रायः शक्ति केन्द्रीभूत, अवस्थिति और गोचर होती है। शक्ति-काव्य के रूप में, जंगनामा काव्य-परम्परा के अंतर्गत प्रतिशोध की भावना, मातृभूमि की रक्षा, वैयक्तिक, राजनैतिक, धार्मिक और आर्थिक स्वतंत्रता, अधिकार-प्राप्ति, राज्य और राष्ट्र की स्वायत्ता, धर्म-स्थापना, शरणागत की रक्षा, प्रजा और प्रजा के अधिकारों की सुरक्षा, स्वत्व, स्वाभिमान तथा वंश गौरव हेतु शक्ति-प्रयोग का संदर्भ प्राप्त होता है। समनानंतर, काव्य-परंपरा के अंतर्गत वैयक्तिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनैतिक अधिकार, स्वतंत्रता और स्वयत्तता, शक्ति और शक्ति-प्रयोग का महत्वपूर्ण प्रदेय है। ध्यातव्य है, जंगनामा-काव्य-परम्परा युद्ध-काव्य परंपरा है। अतः जंगनामा काव्य-परंपरा के शक्ति-काव्य रूप का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण जंगनामा काव्य-परंपरा का युद्ध से प्रत्यक्ष सम्बन्ध ही है। उपर्युक्त काव्य परंपरा के अंतर्गत युद्ध अथवा संबंधित कार्य-व्यापार के अंतर्गत सर्वत्र शक्ति का ही विशेष आख्यान, प्रसंग और प्रकरण विद्यमान और प्राप्त होता हैं अतः शक्ति-काव्य के रूप में जंगनामा काव्य-परंपरा का स्वरूप, औचित्य और वैशिष्ट्य स्वयंसिद्ध है।

जंगनामा काव्य-परंपरा हिन्दी साहित्येतिहास के अंतर्गत विशुद्ध युद्ध और ओज काव्य-परंपरा के रूप में प्राचीन काल से लेकर आद्यान्त समानांतर प्रभावी, प्रासंगिक और समीचीन काव्यधारा है। जंगनामा कव्य-परंपरा जहाँ एक ओर समाज और व्यक्ति के संदर्भ में युद्ध की चेतना

को स्वाभाविक वृत्ति के रूप में प्रतिपादित और प्रस्तुत करते हुए मानव-समाज और मनुष्य के संदर्भ में युद्ध की वांछनीयता, आवश्यकता, प्रामाणिकता, ऐतिहासिकता और औचित्य को पुष्ट करती है तो वही समानांतर युद्ध और काव्य तथा युद्ध, काव्य और मनुष्य के पारस्परिक संबंधों का भी विशिष्ट आख्यान प्रस्तुत करती है। समानान्तर, जंगनामा काव्य-परंपरा ऐतिहासिक युद्ध की घटनाओं और उनसे संबंधित कार्य-व्यापार को अपनी कथावस्तु के अंतर्गत समाहित किए हुए विकासमान काव्य-परंपरा है अतः जंगनामा काव्य-परंपरा के संदर्भ में प्राचीन भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था का ऐतिहासिक और प्रामाणिक बोध भी प्राप्त होता है। काव्य-परंपरा के अंतर्गत वर्तमान और भावी सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था के संदर्भ में, प्राचीन सामाजिक-सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनैतिक प्रतिमानों का भव्य प्रतिचित्र और बोध प्राप्त होता है।

प्रासंगिकता के सन्दर्भ में, जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत, स्वातन्त्र्य-चेतना और शौर्य चेतना के क्रम में युद्ध के विशिष्ट आख्यान के माध्यम से जहाँ एक ओर राजनीति, सैन्य नीति, कूटनीति, युद्ध नीति, व्यूह नीति, राजनैतिक और सैन्य गठबंधन आदि का प्रासंगिक बोध प्राप्त होता है तो वहीं दूसरी ओर काव्य-परंपरा के अंतर्गत साहित्यिक प्रदेय के संदर्भ में विविध क्षेत्रीय भाषाओं, बोलियों, लोकगीतों, मुहावरों, लोकोक्तियों और पदवालियों का भी विशिष्ट सन्दर्भ भी प्राप्त होता है। इसी क्रम में, ध्वन्यात्मक काव्य परंपरा होने के कारण जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत छंदों के प्रचुर प्रयोग के संदर्भ में अत्यंत प्राचीन और अल्पप्रयुक्त छंदों का भी विशेष ज्ञान और बोध प्राप्त होता है। जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत लोक और अंचल विशेष की विशिष्ट आंचलिक, सामाजिक-सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं, प्रथाओं, रीति-रिवाजों, मत-मान्यताओं का भी प्रासंगिक और समीचीन बोध प्रदान करती है। जंगनामा काव्य-परंपरा जंग अथवा युद्ध के यथार्थ, प्रामाणिक और ऐतिहासिक विवरणों की प्रस्तुति के संदर्भ में जहाँ एक ओर तो आदर्श काव्य-परंपरा के रूप में स्वयं को स्थापित करती है तो वहीं दूसरी ओर कवि के सामाजिक और साहित्यिक उत्तरदायित्व को भी जागृत, पुष्ट और प्रमाणित करती है। समानांतर, जंगनामा काव्य-परंपरा पाठालोचन, समालोचन और अनुसंधान का विकल्प भी प्रदान करती है।

विषयवस्तु,कथावस्तु और भावात्मक-कलात्मक सृष्टि के सन्दर्भ में उपर्युक्त वैशिष्टय को स्वयं में आत्मसात करती हुई जंगनामा काव्य-परंपरा राष्ट्रीय चेतना, वीर कर्म, मातृभूमि के प्रति प्रेम, त्याग और रक्षण के भाव, स्वत्व और अस्तित्व की रक्षा हेतु वर्तमान और भावी पीढ़ी में युद्ध संघर्ष और आत्मोत्सर्ग की भावना को प्रेरित, उद्वेलित और विकसित करने का महत्वपूर्ण माध्यम है। जंगनामा काव्य-परंपरा न केवल प्राचीन भारत के आत्मगौरव, वंश-गौरव, आत्मसम्मान और प्रतिष्ठा के लिए युद्ध और प्राणोत्सर्ग की परम्परा की महागाथा है अपितु भारत के स्वर्णिम इतिहास और महनीय वीर व्यक्तित्वों के जीवन, विचार, कर्म और उपलब्धियों का भी ज्वलंत दस्तावेज है। जंगनामा काव्य-परंपरा का उद्भव, विकास, भूत और वर्तमान स्वरूप तथा अस्तित्व, जंगनामा-काव्य की विषयवस्तु का कलात्मक और भावात्मक वैशिष्ट्य, जंगनामा काव्य-परंपरा की सामाजिक-सांस्कृतिक उपादेयता और प्रभाविता का गुणात्मक अनुशीलन प्रस्तुत शोध-प्रबंध का केंद्रीय उद्देश्य है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के अंतर्गत जंगनामा काव्य-परंपरा के महत्वपूर्ण और प्राप्य प्रबंध और मुक्तक काव्यों का आधार ग्रन्थ के रूप में उपयोग हुआ है। प्रस्तुत प्रबन्ध के आधार ग्रन्थ के रूप में क्रमशः अणीराय कृत 'जंगनामा', श्रीधर कृत 'जंगनामा', सूर्यमल्ल मिश्रण कृत 'वीर सतसई', हरिनाम कृत 'केसरी सिंह गुणरासो', चन्द्रशेखर कृत प्रबंध-काव्य 'हमीर हठ', ननकऊ सिंह कृत 'जंगनामा', श्यामनारायण पाण्डेय कृत प्रबंध-काव्य 'हल्दीघाटी' का प्रयोग हुआ है। शोध-प्रबन्ध के अन्तर्गत उपर्युक्त जंगनामा काव्यों की विषयवस्तु और कथावस्तु के अंतर्गत प्राप्य सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक, साहित्यिक संरचनाओं और मत-मान्यताओं का जंगनामा काव्य-परंपरा के संदर्भ में विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक और तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शोध-प्रबन्ध के अन्तर्गत उपर्युक्त आधार ग्रंथों के अतिरिक्त अन्य महत्वपूर्ण सहायक ग्रंथों, कोश-ग्रन्थों, व्याकरण ग्रन्थों तथा वांछित शोध-प्रविधियों का प्रयोग स्वयंसिद्ध है।

शोध-विषय के सूक्ष्मतम और सांगोपांग अध्ययन, विश्लेषण और मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध पाँच अध्यायों में विभक्त है तथा विषयवस्तु सापेक्ष प्रत्येक अध्याय को उचित और वांछित उप-अध्यायों में विभक्त किया गया है।

शोध-प्रबन्ध का प्रथम अध्याय **'जंगनामा काव्य : स्वरूप'** है। इस अध्याय के अंतर्गत जंगनामा-काव्य के स्वरूप का विस्तृत विवेचन-विश्लेषण किया गया है। जंग अर्थात युद्ध और काव्य का संबंध, युद्ध और मनुष्य का सम्बन्ध तथा युद्ध, मनुष्य और काव्य के परस्पर त्रिकोणीय संबंध का सूक्ष्म विश्लेषण इस अध्याय का प्राथमिक उद्देश्य है। समानांतर, अध्याय के अंतर्गत युद्ध-काव्य परंपरा के रूप में आदिकालीन वीर-काव्य परंपरा, मध्यकाल विशेषतया रीतिकालीन और आधुनिक कालीन जंगनामा काव्य-परंपरा तथा अन्य काव्य परंपराओं के मध्य संबंधों तथा साम्य-वैषम्य का सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवेचन भी अध्याय की विषयवस्तु का एक महत्वपूर्ण अंग है। समानांतर, काव्य-परंपरा के रूप में जंगनामा-काव्य की विकास-परम्परा के विवेचन-विश्लेषण और मूल्यांकन के साथ-साथ जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत इतिहास और यथार्थ के तंतुओं का अनुसंधान और उनके यथोचित विवेचन-विश्लेषण का उपक्रम अध्याय के अंतर्गत प्रस्तुत है। शोध प्रबंध का यह अध्याय जंगनामा-काव्य के स्वरूप और विकास-परंपरा के मूल्यांकन के सन्दर्भ में सूक्ष्म और सम्यक शोध और चिंतन-दृष्टि प्रदान करता है।

शोध-प्रबन्ध का द्वितीय अध्याय **'जंगनामा काव्य : उद्भव और विकास'** है। इस अध्याय के अंतर्गत काव्य-परंपरा के रूप में, जंगनामा-काव्य की ऐतिहासिक विकास-परंपरा और संबंधित अवयवों के विवेचन-विश्लेषण का उपक्रम निहित है। जंगनामा-काव्य की विकास-परंपरा के अध्ययन-मूल्यांकन के क्रम में जंगनामा काव्य की ऐतिहासिकता तथा जंगनामा काव्य के लिखित, मौखिक सूत्रों के आदि, मध्य और वर्तमान स्वरूप का विवेचन विश्लेषण अध्याय की विषयवस्तु का महत्वपूर्ण प्रतिपाद्य है। इसी क्रम में, जंगनामा काव्य-परंपरा के प्राचीन लिखित स्वरूप अर्थात वैदिक और संस्कृत साहित्य की युद्ध आख्यानक परंपरा, आदिकालीन तथा मध्यकालीन वीर-कव्य परंपरा का विवेचन विश्लेषण करते हुए उत्तर मध्यकालीन विशेषतया रीतिकालीन और

आधुनिक कालीन जंगनामा काव्य-परंपरा के विशिष्ट वितान तक पहुँचने का प्रयास आपेक्षित है। अन्य युद्ध और वीर-काव्य परंपरा से जंगनामा काव्य परंपरा का विशिष्ट पार्थक्य तथा इस पार्थक्य के महत्वपूर्ण कारण-तत्वों का सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवेचन-विश्लेषण भी प्रस्तुत अध्याय की विषयवस्तु का केंद्रीय भाग है। समानान्तर, जंगनामा काव्य-परंपरा के रूप में प्राप्त महत्वपूर्ण जंगनामा काव्यों का संक्षिप्त समीक्षात्मक परिचय अध्याय और संबन्धित अध्ययन की विषयवस्तु की पूर्णता का एक महत्वपूर्ण उपक्रम है। शोध-प्रबन्ध का यह अध्याय शोध कार्य के अन्तर्गत दृष्टि-विस्तार तथा पूर्णत्व के लिए महत्वपूर्ण और वांछनीय है।

शोध प्रबन्ध का तृतीय अध्याय **'जंगनामा काव्य-परंपरा : अर्थ-विन्यास'** है। इस अध्याय के अंतर्गत जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत प्राप्य महत्वपूर्ण जंगनामा ग्रन्थों के संदर्भ में, जंगनामा काव्य-परंपरा के अर्थ-विन्यास, अर्थोत्पत्ति और अर्थ ग्राह्यता का सूक्ष्मतम विवेचन और विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत अर्थ-विन्यास और अर्थ-निष्पत्ति के महत्वपूर्ण और विशिष्ट उपदान के रूप में जंगनामा काव्य-परंपरा के अंतर्गत प्राप्य कथानक रूढ़ियों के प्रकार, उनकी प्रयोग-विधि और अर्थ निष्पत्ति में उनके महत्व और योगदान का विश्लेषणात्मक मूल्यांकन किया गया है। समानान्तर, जंगनामा काव्य-परंपरा के अन्तर्गत कथानक रूढ़ियों की व्यंजना के क्रम में ऐतिहासिक, मिथकीय और कल्पनाजन्य आदि कथानक-रुढि की विभिन्न कोटियों और उनके प्रयोग की रीतियों का भी सांकेतिक विवेचन-विश्लेषण किया गया है, जो कि प्रस्तुत प्रबंध के संदर्भ में, अध्याय की विषयवस्तु के औचित्य हेतु आवश्यक है। प्रबंध के इसी अध्याय के ही अंतर्गत जंगनामा काव्य-परंपरा के सन्दर्भ में, जंगनामा-काव्यों की अर्थ निष्पत्ति और अर्थ-विन्यास के विवेचन-विश्लेषण, मूल्यांकन के क्रम में सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, युद्ध और शौर्य विषयक मत-मान्यताओं, विचारों, व्यवहारों की व्यंजना के माध्यम के रूप में संबन्धित तत्त्वों और तथ्यों के अनुसंधान का महत्वपूर्ण प्रयास विद्यमान है। शोध-प्रबंध का प्रस्तुत अध्याय जंगनामा काव्य-परंपरा के आंतरिक पक्ष अर्थात आत्मपक्ष अर्थात भाव-पक्ष की व्यंजना और विन्यास के ऐतिहासिक, आदर्श, यथार्थ और कल्पनाजन्य स्रोतों, माध्यमों और परंपराओं का विवेचन

विश्लेषण और प्रमाण प्रस्तुत करता है। शोध-प्रबन्ध का यह अध्याय शोध हेतु आधारग्रन्थ के रूप में गृहीत जंगनामा काव्य ग्रन्थों के भाव-पक्ष के वैशिष्ट्य और प्रभाविता का बोधक है।

शोध-प्रबन्ध का चतुर्थ अध्याय **'जंगनामा काव्यपरंपरा : संरचनात्मक अनुशीलन'** है। इस अध्याय के अंतर्गत जंगनामा काव्य-परंपरा के कलात्मक सौष्ठव अर्थात कला पक्ष अर्थात बहिरंग पक्ष को लक्ष्य किया गया है। प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत जंगनामा काव्य-परंपरा की भाषिक सृष्टि के वैशिष्टय अर्थात जंगनामा काव्य-परंपरा की भाषा के संदर्भ में शब्द, पद, वाक्य आदि की संरचना तथा अर्थोत्पत्ति के क्रम में रस, छंद, अलंकार और ध्वन्यात्मकता आदि का सूक्ष्म-चिंतनपरक विवेचन-विश्लेषण और इनकी पारस्परिक भाषिक सम्बद्धता को प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत जंगनामा काव्य-परंपरा की उपयोगिता, प्रासंगिकता और उपादेयता के क्रम में जंगनामा काव्यों के भाषिक अर्थात कला-पक्ष विषयक अवदान को भी उद्धृत किया गया है। प्रस्तुत अध्याय जंगनामा काव्य-परंपरा के सन्दर्भ में जंगनामा ग्रन्थों के बहिरंग पक्ष के विवेचन और विश्लेषण का महत्वपूर्ण उपक्रम प्रस्तुत करता है।

शोध प्रबन्ध का पंचम और अंतिम अध्याय **'जंगनामा काव्य : आलोचना के निकष'** है। शोध प्रबंध के इस अध्याय के अंतर्गत जंगनामा काव्य-परंपरा के संदर्भ में, शोधगृहीत जंगनामा काव्य-ग्रन्थों के आलोचनात्मक विवेचन-विश्लेषण को लक्ष्य किया गया है तथा जंगनामा काव्य के आलोचनात्मक विवेचन-विश्लेषण के इस क्रम में काव्य के भाव और कला पक्ष को आधारवत (आलोचना के) स्वीकार किया गया है। प्रबंध के इसी अध्याय के अंतर्गत शक्ति काव्य के रूप में जंगनामा काव्य-परम्परा के वर्तमान स्वरूप के विविध आयामों, तथ्यों, तत्त्वों और उपादेयता का भी वांछित मूल्यांकन किया गया है। समानान्तर, जंगनामा काव्य के अंतर्गत यथार्थ और कल्पना संबंधी विविध तत्त्वों, तथ्यों, कारकों, अवययों, आयामों आदि की उपस्थिति और उनके पारस्परिक टकराव अथवा संघर्ष तथा परिणामस्वरूप निःसृत प्रभावों को भी अध्याय के अंतर्गत विवेचित-विश्लेषित किया गया है। साहित्यिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना के संदर्भ में जंगनामा काव्य-परंपरा अर्थात जंगनामा काव्य की वर्तमान और भावी प्रासंगिकता, उपादेयता और महत्व

का विशिष्ट और भविष्योन्मुखी विवेचन-विश्लेषण भी अध्याय की विषयवस्तु का एक महत्वपूर्ण आयाम है। शोध-प्रबन्ध का यह अध्याय शोध विषय से संबंधित परिकल्पना के सत्यापन और शोध से प्राप्त निष्कर्षों के प्रतिस्थापन का महत्वपूर्ण उपक्रम प्रस्तुत करता है। समानान्तर, अध्याय शोध-विषय, शोध-कार्य तथा शोध-निष्कर्षों को विशिष्टता और पूर्णता प्रदान करता है।

निष्कर्ष, प्रत्येक अध्ययन, मनन और चिंतन का महत्तम बिंदु होता है। प्रस्तुत शोध-कार्य का निष्कर्ष शोध प्रबंध के उपसंहार शीर्षक के अंतर्गत परंपरानुसार प्रस्तुत है। शोध प्रबंध का यह भाग संपूर्ण शोध-कार्य और शोध-प्रबंध का सार-तत्त्व, आत्माकार रूप में प्रस्तुत करता है। शोध प्रबंध के इस भाग के अंतर्गत जंगनामा काव्य-परम्परा के सांगोपांग विवेचन, विश्लेषण और मूल्यांकन से निःसृत मत-मान्यताओं को प्रतिपादित किया गया है। काव्य-परंपरा रूप में, जंगनामा काव्य-परंपरा की ऐतिहासिक विकास-परंपरा, जंगनामा काव्य-परंपरा का वर्तमान स्वरूप, जंगनामा काव्य-परंपरा का भावात्मक और कलात्मक विन्यास तथा शक्ति-काव्य के रूप में जंगनामा काव्य-परंपरा की उपादेयता, प्रासंगिकता और महत्व का तथ्यात्मक विवरण 'उपसंहार' की विषयवस्तु का केंद्रीय प्रतिपाद्य है।